धूतपापेश्वर

आयुर्वेद श्रेष्ठता के १५० से अधिक वर्ष

१५० वर्षों से अधिक

शास्त्रोक्त, मानकीकृत, सुरक्षित आयुर्वेद औषधियाँ

औषधि जानकारी पुस्तिका

विस्तार

धूतपापेश्वर

आयुर्वेद श्रेष्ठता के १५० से अधिक वर्ष

१५०

श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

मना रहा है आयुर्वेद सेवा के १५० वर्ष

आयुःकामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम्। आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः।। अ.हृ.सू.१/२

धर्म अर्थात् उद्देश्य, अर्थ अर्थात् सम्पन्नता तथा सुख की प्राप्ति हेतु निरोगी आयुष्य की कामना करनेवाले व्यक्ती के लिए आयुर्वेद इस जीवनशास्त्र द्वारा बताए निर्देशों का निष्ठापूर्वक पालन अनिवार्य है।

विगत १५० सालों से आयुर्वेदशास्त्र में निपुणता प्राप्त करने के साथ ही इस प्राचीन शास्त्र के ज्ञानकोष में अपनी विद्वत्ता, अनुभव तथा विशेषज्ञता के सार को समाविष्ट कर **श्री धूतपापेश्वर** संस्थाने स्वास्थ्य तथा सुख को निरंतर स्थापित किया है और आगे भी करते रहेगी।

हमारे इस कार्य की शुरूआत **श्री. कृष्णशास्त्री पुराणिकजी** द्वारा हुई जिन्होंने आयुर्वेद के मूलभूत तत्त्वों को अबाधित रखते हुए उत्पादन क्षमता को वृद्धिंगत किया। आनेवाली पिढीयों ने आधुनिक तंत्रज्ञान का अवलंब करके भी इन प्राचीन आयुर्वेद औषधियों की गुणवत्ता अबाधित रखी, यही इसकी उत्तम साक्ष है। यह उत्कृष्टता की विरासत कायम है, आज यह संस्था आयुर्वेद के शास्त्रोक्त दवाईयों के एक सर्वोत्तम निर्माता के रुप में उभर रही है, जो अपने ३५० से अधिक कम्पाउंड्स की श्रेणीयों के मानकीकृत, सुरक्षित, शास्त्रोक्त तथा उपयुक्तत होने का अभिमान रखते है। संस्थान्तर्गत निर्माण किए मानकीकरण के संकलन – **श्री धूतपापेश्वर मानक(एस.डी.एस.)** रुग्णों को गैरेंटी तथा आयुर्वेद चिकित्सकों को वारंटी देता है।

आज **श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड**, १५० वी वर्षपूर्ती मना रहा है। यह संस्था उत्तम गुणवत्ता का मापदंड है। **टीम एस्. डी. एल्.** जो अब विद्वान, शास्त्रज्ञ, आयुर्वेद चिकित्सक तथा अन्य शास्त्रों से युक्त है, संपूर्ण विश्व **स्वास्थ्य, सुख, आयुर्वेद... सर्वदा** से संपन्न हो, इस संस्थापकों की दूरदृष्टि की पूर्तता के लिए कटिबद्ध है।

शास्त्रोक्त, मानकीकृत, सुरक्षित एवं उत्तम गुणवत्ता के आयुर्वेद दवाईयों के निर्माता

धूतपापेश्वर

आयुर्वेद श्रेष्ठता के १५० से अधिक वर्ष

१५० वर्षों से अधिक

ISO Certificate

GMP Certificate

- १५० से अधिक वर्षों से आयुर्वेद औषधि निर्माण की यशस्वी परंपरा
- आय्. एस्. ओ. ९००१ : २०१५ एवं जी. एम्. पी. प्रमाणित उत्पादन सुविधा
- अत्याधुनिक तंत्रज्ञान से परिपूर्ण मान्यताप्राप्त ड्रग टेस्टिंग लॅबोरेटरी
- सुरक्षितता एवं अन्य फार्मास्युटिकल स्टडीज हेतु **CPCSEA** मान्यताप्राप्त ॲनिमल हाऊस
- डी.एस्. आय.आर रजिस्टर्ड रीसर्च एण्ड डेव्हलेपमेण्ट युनिट
- ३५० से अधिक शास्त्रोक्त, मानकीकृत एवं सुरक्षित आयुर्वेद औषधियों का निर्माण
- सभी दवाईयाँ आयुर्वेद एवं आधुनिक निकषों पर मानकीकृत
- लेबल पर स्थित क्यु आर कोड द्वारा वेबसाईटपर क्वालिटी मोनोग्राफ उपलब्ध करनेवाली विश्व की पहली आयुर्वेद कंपनी
- भस्म एवं रसौषधियों की सुरक्षितता प्रस्थापित करने की दिशा में निरंतर कार्यरत
- भारत, श्रीलंका, नेपाल आदि देशों में औषधियों की उपलब्धता
- एन्.आय.ए.– जयपुर, के.ई.एम्.– मुंबई, आय.आय.टी.– मुंबई, पारुल – युनिव्हर्सिटी जैसी सुप्रसिद्ध संस्थाओं के सहयोग से एक्स्पेरिमेंटल तथा क्लिनिकल ट्रायल्स की सफलता से पूर्ती

ई–मेल: healthcare@sdlindia.com • www.sdlindia.com

श्री धूतपापेश्वर

मानक

मानकीकरण

आज के दौर में हर चीज को मानकीकृत किया जा रहा है, चाहे वह कोई वस्तु हो, आहारीय घटक हो या हो आयुर्वेदिक दवाई। उपभोक्ता को उचित गुणवत्ता की चीज प्राप्ति हो, इसीलिए मानकीकरण एक आवश्यक बात हो गयी है।

आयुर्वेद की दवाईयों की शास्त्रशुद्धता को कायम रखते हुए, उनके घटक द्रव्य एवं गुणधर्मों में सातत्य लाने तथा आयुर्वेदिक औषधि द्रव्य प्रयोग हेतु हर समय से उपलब्ध हो, यही उद्देश्य रहा है, लगभग १९५० के पूर्व में स्थापित **श्री धूतपापेश्वर लि.** के रासायनिक प्रयोगशाला के पीछे।

कईं लोगों का यह मानना है, जिस तरह आधुनिक दवाईयों का मानकीकरण किया जाता है, आयुर्वेद की दवाईयों का उस तरीके से मानकीकरण करने की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन **श्री धूतपापेश्वर लि.** में मानकीकरण की प्रक्रिया को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

मानकीकरण की प्रक्रिया से किसी भी दवाईयों में घटक द्रव्य के प्रमाण तथा गुणवत्ता की निश्चिति, उसका स्वरुप हर गट में वैसा ही है या नहीं इसका परीक्षण किया जाता हैं। साथ ही निर्माण की हुई दवा क्या उसी अवस्था में रहती है, क्या विशिष्ट काल के बाद उसमें बदलाव आ रहे हैं, अगर बदलाव आ रहे हैं, तो वह कौनसे है, किस वजह से हैं, इन बातों को समझने के बाद उसपर उपाय निर्धारित किए जा सकते हैं। घटक द्रव्यों पर शोधनादि संस्कार करने पर उनमें किस प्रकार के बदलाव होते हैं, किये हुअे संस्कार हर बार एक जैसे ही हो रहे हैं या इसपर निगरानी रखना अत्यंत अनिवार्य होता है। जैसे की गुग्गुल के सामान्य शोधन एवं रोगानुरुप विशिष्ट उपयुक्त द्रव्य से विशेष शोधन के पश्चात् गुग्गुल की

कार्मुकता में वृद्धि होती है तथा उसके क्षोभ उत्पन्न करने वाले दोष से लगभग मुक्ति पायी जाती है। शास्त्रवचन का उचित पालन करने पर घटक द्रव्यों के गुणों में हुए इन लाभकर बदलावों को रासायनिक प्रयोगशाला के माध्यम से ही जाना जाता है। आयुर्वेद में रसकल्प एवं भस्मों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इन रसकल्प एवं भस्मों की निर्मिति में सुवर्णादि रसधातु, पारद, गंधक आदि द्रव्यों का विशेष रुप से प्रयोग होता है। इन घटक द्रव्यों का शोधन एवं मारण संस्कार उचित न होने पर यह द्रव्य शरीर के लिए अहितकर सिद्ध हो सकते हैं। यह संस्कार योग्य पद्धति से हुए हैं या नहीं इसे जानने हेतु मानकीकरण अनिवार्य है। **श्री धूतपापेश्वर लि.** में आयुर्वेदिक एवं आधुनिक इन दोनों पद्धतियों से भस्म एवं रसकल्पों के मानकीकरण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। श्री धूतपापेश्वर की अपनी प्रयोगशालाने एन्.ए.बी.एल्. ॲक्रेडीशन प्रमाणित प्रयोगशाला होने का सम्मान प्राप्त किया है। इस प्रयोगशाला में एटोमिक एब्सोर्प्शन स्पेक्ट्रोफोटोमिटर, एच्.पी.टी.एल्.सी., गॅस क्रोमॅटोग्राफी आदि परीक्षा साधन उपलब्ध हैं।

इस प्रयोगशाला के सहयोग से श्री धूतपापेश्वर मानक यह **श्री धूतपापेश्वर लि.** संस्थाने मानक अर्थात स्टँडर्ड्स विकसित किये हैं। इन मानकों के आधारपर प्रत्येक घटक द्रव्य से लेकर अंतिम उत्पाद तक निर्मिति के हर स्तर पर मानकीकरण किया जाता है। इसी का फल है, कि **श्री धूतपापेश्वर लि.** की सारी ही दवाईया अत्यंत शास्त्रोक्त, मानकीकृत, सुरक्षित एवं उपयुक्त पायी जाती हैं। श्री धूतपापेश्वर लि. द्वारा निर्मित सभी दवाईयों के प्रत्येक गट का मानकीकरण होने के पश्चात् ही वह बाजार में वितरित हो जाती हैं। **श्री धूतपापेश्वर लि.** द्वारा विकसित प्रोडक्ट मोनोग्राफ को हमारी वेब साईट **www.sdlindia.com** पर हर एक उत्पाद के साथ जोड रखा गया है, ताकि कोई भी कभी भी उसे देख सके तथा उसके बारे में जान सके। देश की यह पहली ऐसी आयुर्वेदिक कंपनी है, जिसने अपने प्रोडक्ट मोनोग्राफस् उपभोक्ता के लिए संपूर्ण पारदर्शकता से इस प्रकार प्रदर्शित किया है।

स्वामला®

प्रोप्रायटरी

हर मौसम में संपूर्ण स्वास्थ्यवर्धक

शरीर घटकों का बल बढाए

रोगप्रतिकारशक्ति सक्षम बनाए

उत्साह एवं उर्जा को बढाए

रोग पुनरूत्पत्ति रोकने में मदद करें

श्वसनसंस्थान का बल बढाए

स्वास्थ्य को बरकरार रखें

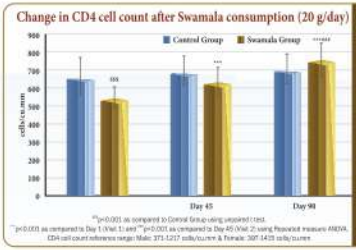

स्वामला के स्वस्थ व्यक्तियों में किए गये पायलट स्टडी में सीडी ४ तथा न्युट्रोफिल काऊन्ट में वृद्धि पायी गयी। साथ ही ९० दिनों तक स्वामला का निरंतर सेवन किए जाने पर जीवन के गुणवत्ता स्तर में स्पष्ट रुप से सुधार दिखाई दिया। इससे स्वामला की रोगप्रतिकारशक्ती बढाने की क्षमता सिद्ध होती है, जिससे यह प्रतिबंधात्मक एवं स्वास्थ्यप्रवर्तक औषधि के रुप में असरदार साबित होता है।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070009
Swamala

उपलब्धता: ५०० ग्राम, १ किलो

मात्रा एवं अनुपान: प्रौढ व्यक्ति –
१ बडा चम्मच सुबह – शाम खाली पेट अथवा अग्निबल के अनुसार

१२ साल के उपर बालक –
१ छोटा चम्मच दिन में दो बार अथवा अग्निबल के अनुसार

सेहत का खजाना, दो चम्मच रोजाना!

प्यार जताए आसानी से

रिश्तों में दूरियां आने न दे,

शिलाप्रवंग स्पेशल,
इसका सप्तधातुपोषण जगाए उत्साह, उमंग और चेतना

धूतपापेश्वर
आयुर्वेद श्रेष्ठता के १५० से अधिक वर्ष

१५०

प्यार ऐसा
पहले जैसा

www.sdlindia.com
स्वास्थ्य और व्यापार संबंधित पूछताछ के लिए कॉल करें 1800 22 9874 पर

च्यवनप्राश (अष्टवर्ग)

स्वास्थ्य एवं रोगप्रतिकारशक्तिवर्धक

उपयुक्तता:

- प्राणवह स्रोतस् विकार जैसे राजयक्ष्मा, जीर्ण कास, श्वास
- जीर्ण विकार जैसे धातुक्षय, दौर्बल्य
- बच्चों में बार बार होने वाले विकार जैसे प्रतिश्याय, कास, देहभारक्षय, अग्निमांद्य

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 010001
Chyavanprash

मात्रा एवं अनुपान: प्रौढ व्यक्ति – २ चम्मच सुबह – शाम खाली पेट
बालक (५ साल के उपर) – १ चम्मच सुबह – शाम

अश्वगंधा पाक

उत्तम धातुपुष्टिकर रसायन कल्प

उपयुक्तता:

- शुक्रवर्धन
- बल्य
- रसायन
- धातु पुष्टिकर

मात्रा एवं अनुपान: ५ से १० ग्राम (१ से २ चम्मच) दिन में १ से २ बार अथवा व्याधि अवस्थानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 010064
Ashvagandha Pak

कौंच पाक

क्षीण शुक्र में लाभदायक

उपयुक्तता:

- दौर्बल्य
- मूत्रविकार
- क्षीण शुक्र
- वातरोग

मात्रा एवं अनुपान:
५ से १० ग्राम (१ से २ चम्मच) दिन में १ से २ बार कोष्ण दुध के साथ अथवा व्याधि अवस्थानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 010046
Kaunch Pak

मुसली पाक

उत्कृष्ट वाजीकर कल्प

उपयुक्तता:

- वीर्यवर्धन
- बल्य
- कान्तिवर्धन
- रसायन

मात्रा एवं अनुपान: ५ से १० ग्राम (१ से २ चम्मच) दिन में १ से २ बार कोष्ण दुध के साथ अथवा व्याधि अवस्थानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 010035
Musali Pak

द्राक्षोविन® स्पेशल

सुप्रीम हेल्थ टॉनिक

उपयुक्तता:

- अग्निमांद्य
- शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य
- कास, श्वास
- अजीर्ण, आध्मान
- स्मृतिमांद्य
- राजयक्ष्मा, कार्श्य

मात्रा एवं अनुपान:
३ से ४ चम्मच (१५ से २० मि.लि.) दिन में २ बार
भोजनोत्तर समभाग जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070005
Drakshovin

शतावरी कल्प™ ब्रॉन्युल्स

आयुर्वेद पोषक योग

उपयुक्तता:

- गर्भिणी एवं गर्भ का पोषण करें
- सूतिका अवस्था में स्तन्यवर्धक
- बालकों तथा वृद्धों में उत्तम धातुपोषक
- रक्तप्रदर
- शारीरिक तथा मानसिक थकान
- अनियमित रजप्रवृत्ति

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070253
Shatavari Kalpa

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच सुबह – शाम दूध के साथ

शीतसुधा®

गर्मी से राहत एवं ठंडक

उपयुक्तता:

- मूत्रदाह
- तृष्णाधिक्य
- ज्वर
- सर्वांगदाह
- मूत्रप्रवृत्ति में कष्टता
- उष्णताजन्य थकान

मात्रा एवं अनुपान: २ बडे चम्मच (३० मि.लि.) १८० मि.लि. जल या दूध के साथ अच्छी तरह घोलकर आवश्यकता अनुसार सेवन करे

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070248
Sheetasudha

शिलाप्रवंग® स्पेशल

एक आदर्श सप्तधातुपोषक

उपयुक्तता:

- शीघ्रवीर्य पतन
- मनोदौर्बल्य
- शुक्रक्षीणताजन्य नपुंसकता
- स्वप्नदोष
- क्लैब्य
- मैथून अक्षमता
- इन्द्रिय शैथिल्य

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0700074
Shilapravang

मात्रा एवं अनुपान: १ से २ गोलियाँ दिन में २ बार दूध के साथ

अणु तेल

नासा बिंदू के तौर पर उपयुक्त

उपयुक्तता:

- उर्ध्वजत्रुगत विकार जैसे
  - पूरानी सर्दी
  - सिरदर्द
  - अर्धशिशी
  - मन्यास्तंभ
  - खालित्य तथा पालित्य
  - एलर्जिक प्रतिश्याय

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 150044
Anu Taila

मात्रा: २ बुंद प्रत्येक नथुनों में दिन में १ से २ बार

आयुष-६४ टॅबलेट्स

संक्रमणजन्य विकारों में उपयुक्त

मात्रा एवं अनुपान:
विषम ज्वर – ५०० मि.ग्रा. की ४ गोलियाँ दिन में ३ बार खाने के बाद ५ से ७ दिन के लिए
लक्षणरहित विषाणु संक्रमण (कोविड) – ५०० मि.ग्रा की २ गोलियाँ दिन में दो बार खाने के बाद कोष्ण जल के साथ २० दिनों के लिए
मृदु से मध्यम संक्रमण – ५०० मि.ग्रा की २ गोलियाँ दिन में तीन बार खाने के बाद कोष्ण जल के साथ २० दिनों के लिए

उपयुक्तता:

- संक्रमणजन्य ज्वर जैसे मलेरिया
- अलक्षणात्मक अथवा अल्पलक्षणयुक्त कोविड १९

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 3100034
AYUSH-64 Tablets

आयुष क्वाथ टॅबलेट्स

रोगप्रतिकारशक्ती बढानें में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- रोगप्रतिकारशक्ती बढाने में सहायता करे
- श्वसनसंस्थान संबंधित लक्षण जैसे गले में खराश, खाँसी, सर्दी आदि
- विकृत कफ निर्मिती को रोके
- पचन संस्थान का कार्य सुधारे

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030149
Ayush Kwath Dispersible Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से ६ गोलियाँ दिन में २ बार कोष्ण जल में घोलकर।
मात्रा निश्चिती बल के अनुसार की जाती है। मात्रा निश्चित करने के लिये अपने आयुर्वेद चिकित्सक से सलाह जरूर ले।

गुलकंद

प्रवाल तथा मौक्तिक युक्त

शरीर में उत्पन्न अधिक उष्णताजन्य लक्षणों में राहत

उपयुक्तता:

- मुँह में छाले होना
- पेट साफ न होना
- उर:उदर दाह
- आँखों की जलन
- गुद प्रदेश में दाह

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच दिन में २ बार दूध या घी

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 310002
Gulkand

कांचन
~ केश तेल ~

शिरो अभ्यंग के लिए उपयुक्त केश तेल

उपयुक्तता:

- अकालिन पालित्य
- अरुंषिका
- बालों को लंबे बनाना
- खालित्य
- केशभूमि कण्डु
- केशस्फुटन

उपयोग का तरीका:
सिर की त्वचा गीली हो जाए, उतना तेल कटोरी में लेकर गरम पानी में रखकर गुनगुना करें, हलके हाथ से सिर की त्वचा में तेल की मालिश करें। १५-२० मिनिट तक शांत बैठे फिर गुनगुने पानी से सिर धो ले।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 150258
Kanchan Hair Oil

महासुदर्शन घन वटी

ज्वर चिकित्सा में उपयुक्त कल्प

उपयुक्तता:

▸ फ्लू संबंधित लक्षण जैसे

- नवज्वर
- विषमज्वर
- आमवात की ज्वरावस्था
- जीर्णज्वर
- संक्रामक ज्वर

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 3100014
Mahasudarshan Ghana Vati

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ

निशामलकी

दोषशामक तथा रसायन योग

पहली बार लिक्वीड स्वरुप में उपलब्ध

उपयुक्तता:

प्रमेह जन्य उपद्रव जैसे

- नेत्रगतविकृति
- वातनाडी विकृति
- त्वचा विकार
- दुष्टव्रण
- बार बार मूत्रप्रवृत्ति
- दौर्बल्य
- वृक्कविकृति

मात्रा एवं अनुपान :
गोली – १ से २ गोली दिन में २ से ३ बार कोष्ण जल के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहानुसार.
लिक्विड – १५ मि.लि. (१ टेबलस्पून) दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 3100044
Nishamalaki Tablets

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 310004
Nishamalaki Liquid

आमला प्लस टॅबलेटस्

शारीरिक बल तथा रोगप्रतिकारशक्ती बरकरार रखने में उत्कृष्ट

उपयुक्तता:

- शारीरिक बल सुधारे
- शरीर धातुओं का पोषण करें
- व्याधिक्षमत्व सुधारे

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0703664
Amla Plus Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ अथवा चिकित्सक के सलाहानुसार

आमला प्लस झिंकयुक्त टॅबलेटस्

यशद भस्म के अतिरिक्त लाभ से युक्त उत्कृष्ट रसायन

उपयुक्तता:

- शारीरिक बल सुधारे
- व्याधिक्षमत्व सुधारे
- शरीर धातुओं का पोषण करें
- श्वसनसंस्थान के विकारों में उपयुक्त
- नेत्र स्वास्थ्य बरकरार रखने में लाभदायी

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ अथवा चिकित्सक के सलाहानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 3100014
Amla Plus with Zinc

धूतपापेश्वर वेदनाशामक लिनिमेंट

तीव्र तथा जीर्ण शूल में उपयोगी

उपयुक्तता:

- तीव्र स्नायु-अस्थि पीडा
- संधि पीडा
- मोच आना

उपयोग का तरीका:
जितनी जरुरत हो उतना लिनिमेंट हाथ पर लेकर हलके हाथ से वेदना स्थान पर लगाएँ एवं थोडी देर हलके हाथ से मालिश करें। लिनिमेंट को जोर जोर से न रगडे। लिनिमेंट लगाने के पश्चात् गरम पानी से सेक कर सकते है, जिससे वेदना और जकडाहट दूर होने में मदद होती है।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070365
Dhootapapeshwar
Pain Relief Liniment

धूतपापेश्वर वेदनाशामक तेल

तीव्र तथा जीर्ण शूल में उपयोगी

उपयुक्तता:

- तीव्र तथा जीर्ण स्नायु- अस्थि पीडा
- संधि पीडा
- मोच
- चिमिचिमी तथा शून्यता

उपयोग का तरीका:
एक स्टील के कटोरे में आवश्यक मात्रा में धूतपापेश्वर वेदनाशामक तेल लें। कटोरे को गरम पानी में रख तेल के गुनगुना होने के बाद भी उसका उपयोग कर सकते हैं। हल्के हाथ से प्रभावित स्थान पर इससे मालिश करें। तेल लगाने के पश्चात् गरम पानी से सेक कर सकते है, जिससे वेदना और जकडाहट दूर होने में मदद होती है।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070363
Dhootapapeshwar
Pain Relief Oil

अरविंदासव

बालकों के विकारों में लाभदायी

उपयुक्तता:

- बालकों के विकार जैसे
  - अग्निमांद्य, दौर्बल्य
  - अस्थिवक्रता
  - मलावष्टंभ
  - फक्क
  - देहोष्मा वृद्धि
  - स्वेदाधिक्य

मात्रा एवं अनुपान:
०.५ से २ चम्मच (३ से १२ मि.लि.) दिन में २ बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100012
Aravindasava

चंदनासव

पित्तजन्य उष्मा तथा दाहशामक आसव

उपयुक्तता:

- पित्तप्रकोप जन्य विकार जैसे
  - रक्तपित्त
  - नेत्रदाह
  - पित्तज प्रमेह
  - मूत्रदाह, मूत्रकृच्छ्र
  - अम्लपित्त
  - त्वचाविकार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100004
Chandanasava

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
भोजनोत्तर समभाग कोष्ण जल के साथ

द्राक्षासव

उत्तम अग्निदीपक तथा पाचक आसव

उपयुक्तता:

- अन्नवह स्रोतस् संबंधित विकार जैसे
  - अग्निमांद्य
  - ग्रहणी
- प्राणवह स्रोतस् संबंधित विकार जैसे
  - कास, श्वास
  - क्षयजन्य कास

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ से ३ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100006
Drakshasava

कनकासव

प्राणवह स्रोतस् विकारों में लाभदायक

उपयुक्तता:

- कास, श्वास
- उदरशूल
- पार्श्वशूल
- तूनी प्रतितूनी

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100052
Kanakasava

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

कुमारी आसव नं. १

यकृत् उत्तेजक तथा पाचक आसव

उपयुक्तता:

- यकृत् वृद्धि
- कामला
- उदर
- शोथ
- कफज कास
- नष्टार्तव

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.)
दिन में २ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100007
Kumari Asava No.1

उपयोगिता समय विशेष ध्यान:
अधिक काल तक अधिक मात्रा में न दे।
मूत्रमार्ग में संरंभ या शोथ निर्माण हो सकता है।

लोहासव

पाण्डु तथा संबंधित लक्षणों में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- पाण्डु
- दौर्बल्य
- आयासेन श्वास कष्टता
- जीर्ण ज्वर संबंधित यकृत् प्लीहा वृद्धि
- अल्पार्तव, कष्टार्तव
- कास श्वास

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
भोजनोत्तर समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100016
Lohasava

पुनर्नवासव

उत्कृष्ट शोथघ्न आसव

उपयुक्तता:

- वृक्क तथा हृदय विकृतीजन्य शोथ
- उदर
- यकृत् प्लीहा वृद्धि
- मूत्राघात
- मूत्रकृच्छ्र
- मूत्राश्मरी

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100018
Punarnavasava

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

सारिवाद्यासव

उत्तम रक्तप्रसादक आसव

उपयुक्तता:

- त्वक् वैवर्ण्य
- पित्त तथा रक्तदुष्टिजन्य पिडका
- वातरक्त
- मुखदूषिका
- भगन्दर

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार समभाग
कोष्ण जल के साथ या वैद्यकीय सलाहनुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100019
Sarivadyasava

उशीरासव

मूत्रवह स्रोतस् विकारों में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- मूत्रकृच्छ्र
- मूत्रदाह
- रक्तप्रदर
- नासागत रक्तपित्त
- तृष्णा
- सर्वांगदाह

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ से ३ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100020
Ushirasava

परिपाठादि काढा

आयुर्वेदिक प्रोप्रायटरी मेडिसिन

उत्तम पित्तशामक काढा

उपयुक्तता

- ज्वर विशेषत: पित्तज ज्वर
- रक्तदुष्टिजन्य विकार
- मुखदूषिका
- पित्तज त्वचा विकार
- दाह

मात्रा एवं अनुपान :

२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
समभाग कोष्ण जल के या अथवा वैद्यकीय सलाहनुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100014
Paripathadi Kadha

उपलब्धता : २०० मि.लि., ४५० मि.लि.

अभयारिष्ट

मलविबंध, अर्श, भगंदर में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- मलावरोध
- अर्श
- भगन्दर
- परिकर्तिका
- उदर

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100022
Abhayarishta

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

अमृतारिष्ट

जीर्ण ज्वर में उपयोगी

उपयुक्तता:

- विषमज्वर
- जीर्ण ज्वर
- त्वचा विकार
- अग्निमांद्य

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ से ३ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100023
Amrutarishta

अर्जुनारिष्ट (पार्थाद्यरिष्ट)

हृदय विकारों में लाभदायी

उपयुक्तता:

- हृद्रोग
- हृद्द्रवता
- आयासेन श्वास
- स्वेदाधिक्य

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100001
Arjunarishta

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.)
दिन में २ से ३ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

अशोकारिष्ट

स्त्रीविकारों में अत्यंत उपयोगी

उपयुक्तता:

- अत्यार्तव
- कष्टार्तव
- अनियमित रज:प्रवृत्ति
- श्वेतप्रदर
- रक्तपित्त
- रक्तार्श

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि,लि.)
दिन में २ से ३ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100002
Ashokarishta

अश्वगंधारिष्ट

शारीरिक तथा मानसिक बल सुधारे

उपयुक्तता:

- शारीरिक तथा मानसिक थकान
- काश्र्य
- जीर्ण वातविकार
- धातुक्षय
- शुक्रक्षय
- ज्वरावस्था जन्य इन्द्रिय शैथिल्य

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ से ३ बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100003
Ashvagandharishta

बलारिष्ट

वातनाडी संस्थान के विकारों में लाभदायी

उपयुक्तता:

- पक्षाघात
- गृध्रसी
- दौर्बल्य
- अर्दित
- संधिगतवात
- काश्र्य

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100028
Balarishta

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि. लि.) दिन में दो बार समभाग
कोष्ण जल के साथ या वैद्यकीय सलाहनुसार

दशमूलारिष्ट

वातव्याधि में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- संधिगत वात
- अवबाहुक
- धातुक्षय
- आमवात
- सूतिका रोग
- श्वास कास

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
भोजनोत्तर समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100005
Dashamoolarishta

जीरकाद्यरिष्ट

उत्कृष्ट अग्निदीपक आसव

उपयुक्तता:

- अग्निमांद्य
- अतिसार
- अरूचि
- आध्मान
- ग्रहणी
- सूतिका रोग जैसे कटिशूल

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100055
Jeerakadyarishta

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

खदिरारिष्ट

सभी प्रकार के कुष्ठ में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- विचर्चिका
- पामा
- ग्रंथी
- एककुष्ठ
- कृमि
- पाण्डु

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100025
Khadirarishta

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ से ३ बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

कुटजारिष्ट

ग्रहणी एवं अतिसार में उत्कृष्ट कल्प

उपयुक्तता:

- अतिसार
- प्रवाहिका
- रक्तातिसार
- संग्रहणी
- जीर्णातिसार

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में २ बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100008
Kutajarishta

सारस्वतारिष्ट

सभी आयु के व्यक्तियों में उपयुक्त मेध्य रसायन

उपयुक्तता:

- स्मृतिमांद्य
- निद्राल्पता
- एकाग्रता में कमी
- उन्माद, अपस्मार

- रजोनिवृत्ती समय दिखनेवाले लक्षण जैसे
  - चिडचिडापन
  - चिंता
  - मानसिक तनाव

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100051
Saraswatarishta

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.)
दिन में २ बार समभाग कोष्ण जल के साथ

विडंगारिष्ट

कृमी तथा कृमीजन्य विकारों में लाभदायी

उपयुक्तता:

- विद्रधी
- गंडमाला
- भगन्दर
- पुरिषज कृमी विकार जैसे
  - पाण्डु वैवर्ण्य
  - त्वक् दुष्टी
  - उदर शूल

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100026
Vidangarishta

भूनिम्बादि काढा

अम्लपित्त तथा संबंधित लक्षणों में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- अम्लपित्त
- उदरशूल
- दाह
- छर्दि
- तृष्णाधिक्य
- शीतपित्त

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.)
दिन में दो बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100045
Bhoonimbadi Kadha

बृहत् वरूणादि काढा

अश्मरी भेदन में लाभकर

उपयुक्तता:

- अश्मरी संबंधित लक्षण जैसे
  - मूत्रदाह
  - मूत्रकृच्छ्र
  - अधोदरशूल
  - कटिशूल

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100101
Varunadi Kadha (Bruhat)

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.)
दिन में दो बार समभाग कोष्ण जल के साथ

गोखरू (त्रिकण्टकादि) काढा

मूत्रवह स्रोतस् विकार में उपयुक्त काढा

उपयुक्तता:

- मूत्रकृच्छ्र
- मूत्रदाह
- मूत्राश्मरी
- बस्तिशोथ

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100102
Gokharu (Trikantakadi) Kadha

महामंजिष्ठादि काढा

त्वचाविकार में उपयुक्त रक्तशोधक काढा

उपयुक्तता:

- विचर्चिका
- मुखदूषिका
- वातरक्त
- एककुष्ठ
- अरूंषिका
- श्लीपद

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100009
Mahamanjishthadi Kadha

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार
समभाग कोष्ण जल के साथ

महारास्नादि काढा

आमवात के सामावस्था में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- आमवात
- संधिगत वात
- गृध्रसी
- अर्दित
- विश्वाचि, अवबाहुक
- पक्षाघात

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100010
Maharasnadi Kadha

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार समभाग कोष्ण जल के साथ

महासुदर्शन काढा

ज्वरावस्था में उत्कृष्ट आमपाचक

उपयुक्तता:

- ज्वरसंबंधित लक्षण जैसे
  - अंगमर्द
  - हस्तपादतल दाह
  - प्रतिश्याय
  - नेत्रदाह
  - अग्निमांद्य
- यकृत् प्लीहा वृद्धि

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100054
Mahasudarshan Kadha

पथ्यादि काढा

शिरोरोग में लाभकर

उपयुक्तता:

- सुर्यावर्त
- अर्धावभेदक
- जीर्ण प्रतिश्याय
- पीनस
- नेत्रपटल व्याधि

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100103
Pathyadi Kadha

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार समभाग कोष्ण जल के साथ

रास्नासप्तक काढा

वातविकारों के सामावस्था में लाभदायी काढा

उपयुक्तता:

- वातविकार के सामावस्था संबंधित लक्षण जैसे
  - संधिग्रह
  - संधिशोथ
  - संधिशूल
- अंगगौरव
- अग्निमांद्य

मात्रा एवं अनुपान:
२ से ४ चम्मच (१० से २० मि.लि.) दिन में दो बार समभाग कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 100104
Rasnasaptak Kadha

अविपत्तिकर चूर्ण

पित्त दुष्टि तथा मलावष्टंभ के लिए मृदुरेचक

उपयुक्तता:

- अग्निमांद्य
- अम्लपित्त
- पाण्डु
- शीतपित्त
- अर्श
- मलमूत्रविबंध

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ
दिन में २ से ३ बार कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030005
Avipattikar Chooma

भास्कर लवण चूर्ण

उत्तम आमपाचक तथा अग्निदीपक चूर्ण

उपयुक्तता:

- अग्निमांद्य
- अजीर्ण
- ग्रहणी
- उदरशूल
- अर्श
- मलविबंध
- कुष्ठ
- कृमि

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030023
Bhaskar Lavana Chooma

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) या ४ से ६ गोली
दिन में २ से ३ बार छांस या कोष्ण जल के साथ

चौसष्ट पिप्पली

प्राणवह स्रोतस् के लिए उत्कृष्ट रसायन

उपयुक्तता:

- कास
- श्वास
- हिक्का
- अग्निमांद्य
- राजयक्ष्मा
- पार्श्वशूल

मात्रा एवं अनुपान:
१२५ से २५० मि.ग्रा. दिन में २ बार शहद या
कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030001
Chousashta Pippali Chooma

धातुपौष्टिक चूण

धातुपोषण तथा बल्य कल्प

उपयुक्तता:

- जीर्ण व्याधि पश्चात् उत्पन्न धातुक्षय
- कार्श्य
- अग्निमांद्य
- शुक्रक्षय
- वन्ध्यत्व

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030021
Dhatupoushtik Chooma

मात्रा एवं अनुपान:
१/२ से १ चम्मच (३ से ६ ग्राम) २ से ४ गोलियाँ
दिन में २ बार दूध अथवा कोष्ण जल के साथ

हरिद्राखंड चूर्ण

शीतपित्त तथा उदर्द जैसे त्वचाविकारों में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- शीतपित्त, उदर्द
- कोठ
- विचर्चिका
- जीर्णज्वर
- कृमि
- पाण्डु

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030138
Haridrakhanda Chooma

मात्रा एवं अनुपान:
१ चम्मच (५ ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार दूध, कोष्ण जल के साथ अथवा चिकित्सक की सलाहानुसार

हिंग्वष्टक चूर्ण

अजीर्ण आध्मान में लाभदायी

उपयुक्तता:

- अग्निमांद्य
- अजीर्ण
- आध्मान
- उदरशूल
- वातविकार

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार भोजन के पहले निवाले में गोघृत मिलाकर अथवा कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030009
Hingwashtak Chooma

पुष्यानुग चूर्ण

उत्तम रक्तस्तंभक योग

उपयुक्तता:

- अत्यार्तव
- रक्तप्रदर
- श्वेतप्रदर
- योनिदोष
- रक्तार्श
- रक्तातिसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030022
Pushyanuga Chooma

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार अशोकारिष्ट या तंडुलोदक के साथ

सितोपलादि चूर्ण

प्राणवह स्रोतस् के पित्तप्रधान विकारों में लाभदायक

उपयुक्तता:

- पित्तप्रधान कास श्वास
- क्षय
- अरोचक
- अग्निमांद्य
- हस्तपादतलदाह
- उर्ध्वग रक्तपित्त

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार शहद, गोघृत या कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030014
Sitopaladi Chooma

स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण

उत्तम मृदुविरेचक कल्प

उपयुक्तता:

- मलविबन्ध
- अर्श
- आमविकार
- त्वचाविकार

मात्रा एवं अनुपान:
१ चमच (५ ग्राम) दिन में १ या २ बार
भोजनोत्तर कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030062
Swadishta Virechan Choorna

तालीसादि चूर्ण

वातकफ प्रधान श्वास कास में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- कफज कास
- श्वास
- अरूचि
- शुष्क कास
- अग्निमांद्य
- प्लीहा वृद्धि

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030018
Taleesadi Choorna

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार शहद, आर्द्रक स्वरस या कोष्ण जल के साथ

त्रिफला चूर्ण

मलविबंध तथा संबंधित विकारों में उपयुक्त

उपयुक्तता:

- मलविबंध
- अरूचि
- प्रमेह
- नेत्ररोग जैसे नेत्रदाह, दृष्टिमान्द्य
- कुष्ठ
- नेत्र आरक्तता
- अग्निमांद्य

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ चम्मच (५ से १० ग्राम) अथवा ४ से ६ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार शहद, गोघृत के असमान मात्रा के साथ अथवा कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030015
Triphala Choorna

गंधर्व हरितकी

उत्कृष्ट स्निग्ध रेचक कल्प

उपयुक्तता:

- मलावष्टंभ
- त्वचा विकार
- आमवात
- गुदगत विकार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 030057
Gandharva Haritaki

मात्रा एवं अनुपान:
१/२ से १ चम्मच (३ से ६ ग्राम) अथवा १ से २ गोलियाँ दिन में २ बार अथवा चिकित्सक के सलाहानुसार

आमलकी टॅबलेटस्

स्वास्थ्य तथा रोगप्रतिकारशक्तिवर्धक

उपयुक्तता:

- प्रमेह
- पालित्य
- अकाल वार्धक्य
- खालित्य
- अल्पव्याधिक्षमत्व
- अम्लपित्त

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 210032
Amalaki Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ

अर्जुन टॅबलेटस्

हृदय स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

▸ हृद्रोग संबंधित लक्षण जैसे –
- आयासेन श्वास
- शोथ
- दौर्बल्य
- विकृत मेद वृद्धि

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ से ३ बार दूध अथवा कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 210024
Arjuna Tablets

अश्वगंधा टॅबलेटस्

शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्यवर्धक

उपयुक्तता:

- शारीरिक दुर्बलता
- अल्पव्याधिक्षमत्व
- संधिवेदना
- मानसिक थकान
- शुक्रधातुक्षय

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 270010
Ashvagandha Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ से ३ बार दूध अथवा कोष्ण जल के साथ

अस्थिसंहृता (हडजोड) टॅबलेटस्

अस्थि स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- संधिशूल
- अस्थिभग्न
- अस्थिशूल
- अस्थिधात्वग्निमांद्य

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ से ३ बार विशेषकर दूध के साथ अथवा गुनगुने जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 2700174
Asthisamhruta (Hadjod)

ब्राह्मी टॅबलेटस्

मस्तिष्क एवं मन के लिए स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- मनोदौर्बल्यजन्य विकार जैसे
  - निद्राल्पता
  - चिड़चिड़ापन
  - चिंता
  - स्मृतिमांद्य
  - मन की अस्थिरता

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार दूध अथवा कोष्ण के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 210061
Brahmi Tablets

गोक्षुर टॅबलेटस्

मूत्रवह प्रणाली स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- मूत्रवह स्रोतस् संबंधी विकार जैसे
  - मूत्रकृच्छ
  - मूत्राश्मरी
  - बस्तिशोथ
- शोथ
- आमवात की जीर्ण अवस्था

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 2700184
Gokshura Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ अथवा चिकित्सक के सलाहानुसार

गुडूची टॅबलेटस्

रोगप्रतिकारशक्ति तथा यकृत् स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- विषमज्वर आदि से उत्पन्न यकृत् विकृती
- यकृत् के कार्य को सुधारने में सहायता करें
- स्थौल्य, प्रमेह आदि मेदोदुष्टिजन्य विकारों में उपयुक्त

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 270014
Guduchi Tablets

कुन्दुरु (शल्लकी) टॅबलेटस्

संधि स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- संधिविकार संबंधित लक्षण जैसे
  - संधिशूल
  - संधिशोथ
  - संधिग्रह

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 2700074
Kunduru (Shallaki)

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ

निम्ब (नीम) टॅबलेटस्

त्वचा स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- रक्तदुष्टिजन्य विकार जैसे
  - मुखदूषिका
  - मुखपाक
  - पामा
  - कच्छु

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 2700114
Nimba (Neem) Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोली दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ

शतावरी टॅबलेटस्

स्त्री स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- कार्श्य
- थकान
- स्तन्य उत्पत्ती को बढाएँ
- चिंता, तनाव

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार गोदुग्ध के साथ

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 210378
Shatavari Tablets

तुलसी टॅबलेटस्

रोगप्रतिकारशक्तिवर्धक तथा श्वसनसंस्थान स्वास्थ्यकर

उपयुक्तता:

- श्वसनसंस्थानसंबंधी विकार जैसे
  - वातकफप्रधान कास
  - साँस फूलना
  - प्रतिश्याय
  - पार्श्वशूल
- अग्निमांद्य
- आध्मान

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 2700005
Tulasi Tablets

मात्रा एवं अनुपान:
१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार कोष्ण जल के साथ

नो आर्टिफिशिअल कलर्स

नॉट टेस्टेड ऑन ॲनिमल्स्

नो आर्टिफिशिअल फ्लेवर्स

नो आर्टिफिशिअल स्वीटनर

नो प्रिझर्विटिव्ह

सस्टेनेबल सोर्सिंग

डू नॉट रेफ्रिजरेट

स्टोर इन १५° टू २०° सेल्सियस

ऑथोराइझ्ड फॉर सेल इन इंडिया

सुंदर बालोंसे ये खेल कैसा,
बाल चमके नहीं वह तेल कैसा!
धूतपापेश्वर
कांचन®
केश तेल
॥ शिरोभ्यंगार्थ ॥
स्वस्थ केश एवं उनकी
जडों के लिए आयुर्वेद उपाय
उपलब्धता: १०० मि.लि.

विस्तार

कंज्यूमर आयुर्वेद

श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाडी, मुंबई -४०० ००४.
फोन नं.:+९१-२२-६२३४ ६३००

Toll Free : 1-800-2 AYUSH
(Dial AYUSH as in 29874
during working hrs 9.00 to 17.00)

For the use only of a Registered Medical Practitioner or a Hospital or a Laboratory.

E-mail: healthcare@sdlindia.com • www.sdlindia.com